दादा भगवान परिवार का

मार्च २०१९

शुल्क प्रति नकल : ₹ 20/-

अक्रम एक्सप्रेस

धारण शक्ति

धारण शक्ति

संपादकीय

बालमित्रों,

परीक्षाएँ नज़दीक आ रही हैं। आप सभी पढ़ाई करने में लग गए होंगे, सही हैं न? कईयों को तो ऐसी शिकायत होगी कि इतना पढ़ते हैं फिर भी याद नहीं रहता। और कईयों को एक बार में ही फटाफट याद हो जाता है। ऐसा क्यों होता होगा?

तो आइए, उसका रहस्य इन अंक में जाने, जिससे आप भी उस शक्ति को विकसित करने के उपाय कर सकें और परीक्षा में अच्छे मार्कस् से पास हो सकें।

यह समझ आपको सिर्फ इस परीक्षा में ही नहीं है बल्कि जीवन की सभी परीक्षाओं में से सफलता पूर्वक पार उतरने में मदद रूप होगी।

-डिम्पल मेहता

वर्ष : ६ अंक: १२
अखंड क्रमांक: ७२
मार्च २०१९

.....

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2018, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

अक्रम एक्सप्रेस

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

प्रश्नकर्ता : एक सत्संग में सुना था कि धारण शक्ति सिर्फ धर्म के मामले में ही होती है। ऐसा आपने कहा था।

दीपक भाई : नहीं। धारण शक्ति अनंत होती है। धारण अर्थात् क्या है कि उसे वह ग्रहण कर सकता है। टीचर क्लास में प्रैक्टिकल सिखाते हैं कि "गरम करो, फिर ऐसे बंद कर दो, उसके अंदर ऐसा करो।" तो एक बच्चे को क्या करना है, वह समझ में ही नहीं आता। उसे वह धारण ही नहीं हो पाता। और दूसरा समझ जाता है और कहे अनुसार प्रयोग कर भी देता है, उसे धारण किया कहा जाएगा। जैसा समझाया हो वैसा ही फॉलो किया जाए, उसे धारण शक्ति कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : ग्रास्पिंग पावर और धारण शक्ति एक है या अलग?

दीपक भाई : धारण शक्ति को ग्रास्पिंग कह तो सकते हैं लेकिन धारण शक्ति ज्यादा सूक्ष्म है। धारण अर्थात् क्या है कि एक बार समझ में आने के बाद कभी जाता नहीं है, इधर-उधर भी नहीं होता। वह उसे पूरी तरह से समझ में आ जाता है। फिर उसमें कभी विरोधाभास उत्पन्न नहीं होता। सामने वाला क्या कहना चाहता है वह उसे हर तरह से समझ में आ जाता है उसे धारण शक्ति कहते हैं।

ज्ञानी कहते हैं...

"सामने वाला क्या कहना चाहता है वह उसे हर तरह से समझ में आ जाता है उसे धारण शक्ति कहते हैं।"

प्रश्नकर्ता : तो क्या धारण शक्ति डेवेलपमेन्ट के अनुसार होती है?

दीपक भाई : डेवेलपमेन्ट तो होता ही है और उसमें ब्रह्मचर्य बहुत हेल्प करता है। उसकी चित्त शक्ति इतनी पावरफुल होती है कि किस कारण से क्या है, वह सब फिट हो जाता है। फिर वह कहीं नहीं उलझता। और यदि किसी को समझाना हो तो वह हज़ारों तरीको से समझा सकता है। कि नहीं, यह नहीं यह है। नहीं यह नहीं, यह है। सभी कनेक्शन होते हैं, उसे धारण किया कहा जाएगा।

प्रश्नकर्ता : नीरू माँ के बारे में मैंने ऐसा सुना है कि दादा का सत्संग खत्म होने के बाद, एक घंटे का सत्संग जैसा होता वैसा शब्दसः लिख सकते थे। एक भी शब्द की भूल नहीं होती थी। तो ऐसा किस तरह से आया होगा?

दीपक भाई : उसमें उनकी पूर्व की लिंक है। जब जन्मों जन्म से ज्ञानी का परिचय होता है तब उनकी पहचान हो जाती है। फिर उनका चित्त उनमें ही रहता है। संसार में, पाँच इन्द्रियों के सुखों में, कषायों में, विषयों में ज़रा भी फेक्चर नहीं हुआ होता है। ज्ञानी की इतनी अधिक आराधना होती है, इतनी ज्यादा भक्ति होती है और साथ में एक निश्चय भी होता है कि उनके कहे अनुसार जगत् को पहुँचाना है। वे जो कहना चाहते हैं, उनका अंतर आशय लोगों को देना है। फिर उनसे सब हो सकता है। ऐसी सिद्धि उत्पन्न हो जाती है कि वे एक-एक शब्द धारण कर सकते हैं और पूरा समझ में आ जाता है, उन्हें पूरी तरह से आरपार पता होता है कि वे क्या कहना चाहते हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी धारण शक्ति क्या एक सिद्धि है?

दीपक भाई : नहीं, बाद में यह परिणाम आता है। और कहीं भी वृत्तियाँ बिगड़ने ही नहीं दी हैं। एक लक्ष्य जो तय हो गया हो, उसमें ही उनका ध्यान रहता है और सब विस्तार से समझ में आ गया होता है। फिर उसे धारण हुआ कहा जाएगा। यह उनकी आराधना का फल आया है। उन्हें उसमें इतना अधिक इन्ट्रेस्ट है और उसकी महत्ता है, इसलिए धारण हो जाता है।

यह तो नई ही बात है !

2

यदि ज्ञानी पुरुष का एक शब्द भी पकड़कर हृदय में धारण कर लेंगे तो वह मोक्ष में पहुँचा देगा।

3

घी, तेल, चीनी, मिठाईयाँ, चीज़ आदि भरपूर खाने से धारण शक्ति कम होती जाती है।

२

धारण नहीं होना अर्थात् पढ़ता है और फिर भूल जाता है। वह उलझ जाता है। उसे समझ में ही नहीं आता।

४

फिल्मों के गीत सुनने से चित्त अशुद्ध होता रहता है। उसके परिणाम स्वरूप धारण शक्तिकम होती जाती है। और ज्ञानी की वाणी सुनते रहने से चित्त शुद्ध होता जाता है। परिणाम स्वरूप धारण शक्ति बढ़ती जाती है।

जो हाज़िर वही हथियार

हज़ारों साल पहले, आज की तरह स्कूल कॉलेज नहीं होते थे, लेकिन गुरुकूल होते थे। गुरुकूल अर्थात् ऐसी पाठशाला कि जहाँ शिष्य गुरु के साथ उनके ही आश्रम में रहकर पढ़ाई पूरी करता था। सामान्यतः गुरुकूल में सामाजिक या आर्थिक भेदभाव नहीं होता था, गरीब और अमीर शिष्य साथ में रहकर पढ़ते थे। आचार्य और गुरु अनेक प्रकार के शास्त्रों और कलाओं में निपुण थे। आश्रम में आने वाले हर एक बालक को उसकी ज़रूरत और रुचि के अनुसार सिखाते थे।

ऐसा ही एक सुंदर गुरुकूल चंदनगढ़ की सीमा पर था। वहाँ के गुरु विद्याचार्य बहुत बड़े विद्वान थे। उनसे शिक्षण प्राप्त करना, वह गौरव की बात मानी जाती थी। और इसीलिए तो, चंदनगढ़ के राजा का पुत्र विजय ने इस गुरुकूल में प्रवेश लिया। चंदनगढ़ की प्रजा ने राजकुमार और अन्य मंत्री पुत्रों को बड़े ही उल्लासपूर्वक गुरुकूल जाने के लिए विदा किया।

महल के एशोआराम और माता-पिता के घर की सुविधाओं से गुरुकूल के तौर तरीके बिल्कुल ही अलग थे। सुबह जल्दी नित्यक्रम के बाद गुरु जी के साथ पढ़ाई होती और उसके बाद आश्रम के छोटे-बड़े कामों में गुरुमाता की मदद करनी होती थी। जहाँ राजकुमार के साथ अन्य विद्यार्थियों को इस नई दैनिकचर्या को अपनाने में अत्यंत कष्ट हो रहा था। वही मंत्री सुबुद्धि का पुत्र सौमित्र ने बहुत ही प्रसन्नतापूर्वक अपने इस नए जीवन को अपना लिया था।

राजकुमार ने पूछा, "सौमित्र, क्या आपको यह सब नई व्यवस्था कठिन नहीं लग रही?"

"विद्या प्राप्ति के सामने ये छोटी-बड़ी व्यवस्था तो नगण्य हो जाती है न, राजकुमार?" ऐसे अमूल्य ज्ञान के आगे इन कष्टों की क्या कीमत है।" सौमित्र की आवाज़ में एक अलग ही खुमारी थी। उनकी विद्या प्राप्त करने की उत्कंठा और गुरु विद्याधर के प्रति प्रेम अजोड़ था।

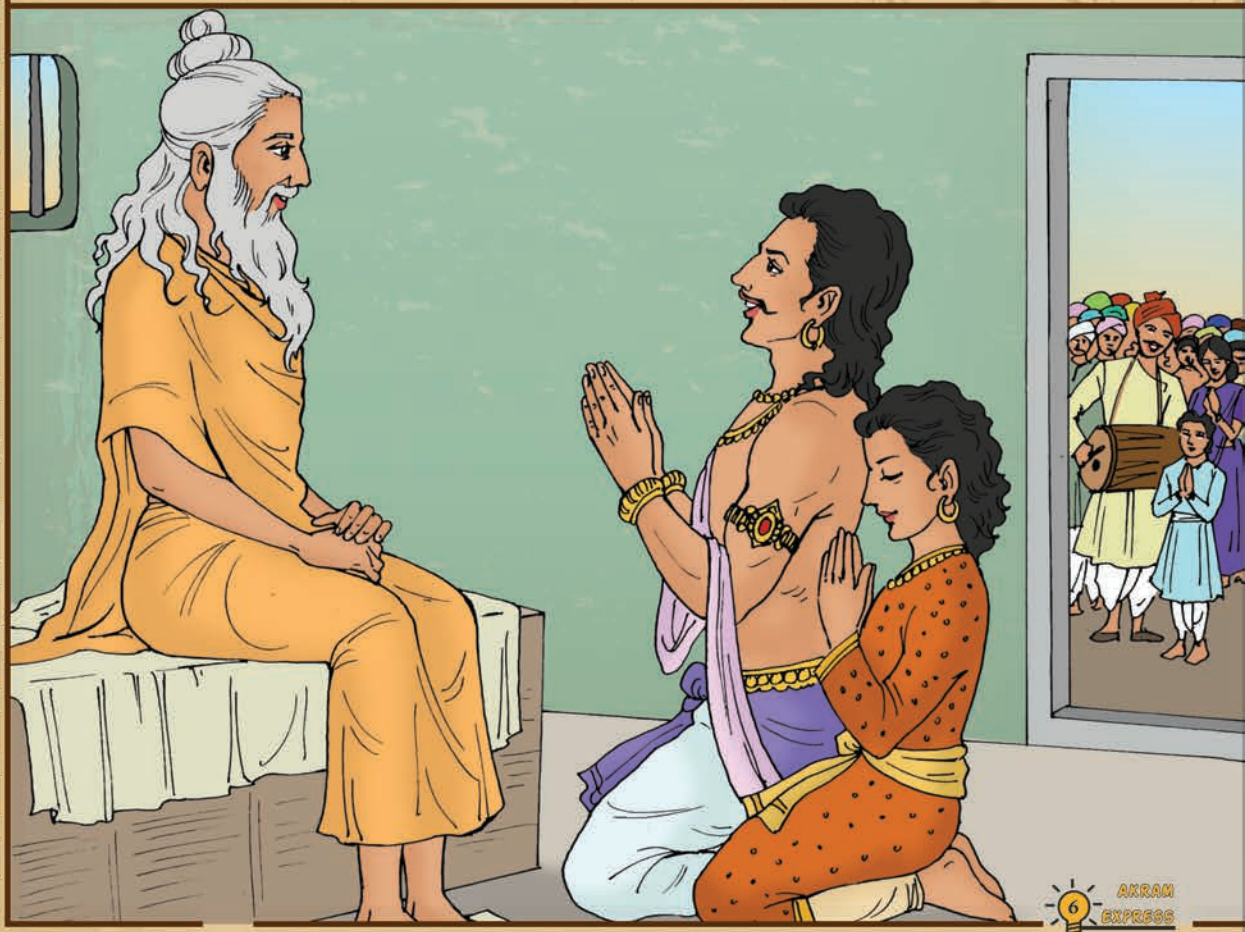

आधी रात का समय था। बाहर बिजली कड़क रही थी। निद्रारानी राजकुमार से रूठ गई थी। इधर-उधर करवटें बदलते-बदलते उनकी आँखें खुल गई।

राजकुमार ने पूछा, "सौमित्र, आपके दिमाग़ का इलाज करवाना अत्यंत आवश्यक है। इस समय क्या लिख रहे हो?"

"आज भोजन के समय गुरु जी ने जो अर्थ शास्त्र के बारे में बातें बताई थीं वे," गुरु जी की बात हो और सौमित्र अहो भाव व्यक्त किए बिना रहे? सौमित्र ने कहा, "गुरु जी की बात में जादू है न!"

आधी रात को, राजकुमार को इन सब बातों से कोई लेना-देना नहीं था। वे बोले, "यदि वास्तव में गुरु जी के पास जादुई शक्ति है तो ये बिजली का कड़कना बंद करवा दें और मुझ पर निद्रारानी की कृपा बरसा दें। यदि कल समय से वर्ग में नहीं पहुँचेंगे तो दंड अवश्य मिलेगा।"

राजकुमार की पिछली रात की भविष्य वाणी, दूसरे दिन सही साबित हुई। बड़ी मुश्किल से वे तो समय पर वर्ग में पहुँचें गए थे, लेकिन अन्य एक विद्यार्थी के देर से आने की वजह से पूरे वर्ग को सज़ा हुई।

"जब सभी की प्रशंसा करनी चाहिए, तब गुरु जी सिर्फ उसकी प्रशंसा करते हैं जिसकी कार्य क्षमता कम होती है। और जब सिर्फ एक को संज़ा करनी चाहिए, तब सभी को सज़ा दे देते हैं। यह तो भाई कैसा नियम है। "राजकुमार अकुला गया।"

"विजय, गुरु जी के हर कार्य में हमारा कल्याण करने का आशय छुपा होता है। कदाचित् वर्तमान में हमें यह आशय समझ में नहीं आए। लेकिन उसकी वजह से गुरु जी के प्रति अविनय या उनके आशय के प्रति शंका करने का कोई कारण नहीं है। "सौमित्र ने राजकुमार को शांत किया।"

उसी समय, एक विद्यार्थी गुरु जी का बुलावा लेकर आया, "गुरु जी ने आप दोनों को अपने खंड में बुलाया है।" राजकुमार के दिल की धड़कनें बढ़ गईं। "क्या गुरु जी को मेरी अकुलाहट का पता चल गया होगा? क्या वे पिताजी से शिकायत कर देंगे?"

"विजय, सौमित्र, ब्राह्मण सोमदत्त ने आश्रम को महायज्ञ में आने का निमंत्रण भेजा है। मैं चाहता हूँ कि आप दोनों उस यज्ञ में हाज़िरी दें।" गुरु जी ने शिष्यों को आज्ञा की।

"जी, गुरु जी" विजय और सौमित्र ने एक साथ जवाब दिया। "हाश," विजय ने चैन की सास ली।

यज्ञ विधिपूर्वक चल रहा था, तभी अचानक एक विक्षेप आ गया। सोमदत्त ब्राह्मण की सास फूलने लगी और एक शब्द का उच्चारण करना भी असंभव हो गया। गाँव वाले परेशान होने लगे, "ऐसे महामुश्किल यज्ञ का मंत्रोच्चार सोमदत्त ब्राह्मण के सिवाय और कोई जानता नहीं है। यह यज्ञ अधूरा रह गया तो।"

सौमित्र ने धीरे से कहा, "राजकुमार, ये मंत्र तो हमने सीखे हैं।"

"सचमुच? कब?" राजकुमार को याद आए उससे पहले तो सौमित्र ने जाकर यज्ञ का मंत्रोच्चार शुरू कर दिया। सोमदत्त ब्राह्मण के आश्चर्य का पार नहीं था। यज्ञ के बाद उनकी सासें फिर से सामान्य हो गईं।

"धन्य है आपको और आपके गुरु को। कुदरत ने आपको ग़ज़ब की धारण शक्ति दी है।" सोमदत्त ने दिल से सौमित्र को आशीर्वाद दिया।

यज्ञ तो निर्विघ्न रूप से संपन्न हो गया लेकिन वापस लौटते समय दोनों शिष्यों के सामने एक अन्य विघ्न आ गई। बरसात की वजह से पहाड़ की मिट्टी खिसक गई थी और जिस रास्ते से वे आए थे वह रास्ता बंद हो गया था।

"अब क्या होगा?" राजकुमार को डर ने घेर लिया।

सौमित्र ने पूछा, "राजकुमार गुरु जी ने एक बार आपतकालिन समय में क्या ध्यान रखना चाहिए उस पर शिविर किया था न, आपको याद है?"

"याद है? यह प्रश्न इस समय ज़रा योग्य नहीं है, रात हो गई है और जंगल में जंगली प्राणी होंगे और आप मुझ से पूछ रहे हो कि याद है?" राजकुमार की स्थिति दयाजनक थी।

सौमित्र ने आँखें बंद कर लीं।

" देखो, सौमित्र, यह कोई ध्यान करने का समय नहीं है, कह देता हूँ तुमसे..."

तभी अचानक भालू की भयानक आवाज़ आई, "हुहुहुहु..." राजकुमार काँपने लगे, सौमित्र ने आँखें खोलीं और धीरे से मुस्कुराए।

"भय की वजह से कही आप..." राजकुमार का अधूरा वाक्य सौमित्र ने पूरा किया, "नहीं, मैंने मानसिक संतुलन नहीं गुमाया है। शिविर में का बताया हुआ इस स्थान का नक्शा याद कर रहा था।"

"और?" राजकुमार ने आशाभरी नज़रों से पूछा।

"और याद आ गया," सौमित्र ने कहा।

"वाह, मित्र वाह, ऐसा तो कौन सा यंत्र है आपके अंदर कि गुरु जी की कही हुई सभी बातें अंदर छप जाती है? और, नक्शा भी। वैसे तो मुझे कोई शिकायत नहीं है। यह यंत्र नहीं होता तो आज हम जीवित वापस नहीं लौट सकते थे।" ऐसे बातें करते-करते दोनों दोस्त सकुशल आश्रम वापस लौट आए।

दूसरे दिन, राजकुमार ने गुरु जी को पिछले दिन की घटनाओं का वर्णन किया और साथ ही साथ सौमित्र की अद्‌भुत धारण शक्ति की बहुत प्रशंसा भी की।

जब गुरु माता ने यह बात सुनी, तब एकांत में गुरु जी से पूछा, "राजकुमार और सौमित्र, दोनों की पढ़ाई एक जैसी ही है। तो इसका क्या कारण है कि सौमित्र की धारण शक्ति इतनी अद्‌भुत है और राजकुमार की नहीं?"

गुरु जी ने तटस्था से जवाब दिया, "सौमित्र का गुरु के प्रति आराधन और विद्या प्राप्त करने की लगन इतनी उच्च प्रकार की है कि मेरा कहा हुआ एक-एक शब्द उसके हृदय में अंकित हो जाता है। लेकिन, राजकुमार के चित्त में मैं नहीं हूँ बल्कि राजमहल के सुख और आराम हैं।"

सालों बीत गए। विद्याभ्यास का समय पूर्ण हुआ इसलिए गुरु जी ने चंदनगढ़ के राजा और मंत्री को उनके पुत्रों को ले जाने के लिए बुलवाया।

पुत्रों को वापस सौंपते हुए जब गुरु दक्षिणा माँगने की बारी आई तब गुरु जी ने राजकुमार विजय से ऐसा वचन माँगा कि वे हमेशा सौमित्र को अपने साथ ही रखेंगे और उनके सूचनों पर संपूर्ण विश्वास रखेंगे।

और सौमित्र से ऐसी गुरु दक्षिणा माँगी कि वे राजकुमार विजय के साथ ही रहेंगे और संपूर्ण वफादारी के साथ जीवनभर सच्ची मित्रता निभाएंगा।

दोनों शिष्यों ने राज़ी खुशी से गुरु जी को वचन दिया और गुरु माता का आशीर्वाद लेने गए।

जब राजा ने गुरु जी से गुरु दक्षिणा के पीछे का आशय पूछा तब गुरु जी ने कहा, "राजकुमार पराक्रमी और परोपकारी है, लेकिन उनमें सौमित्र जैसी धारण शक्ति नहीं है। सौमित्र की धारण शक्ति इतनी अद्‌भुत है कि संयोगानुसार, प्राप्त किया हुआ ज्ञान उन्हें हाज़िर हो जाता है। और जो हाज़िर होता है वही हथियार बन जाता है। मुझे विश्वास है कि एक दूसरे के पूरक बनकर, वे राज्य की बागडोर कुशलता से संभालेंगे और प्रजा का कल्याण और रक्षा करेंगे।"

यह सुनकर, राजा और मंत्री को बहुत संतोष हुआ। आश्रम को बहुत सारे उपहार और सोगादें अर्पण किए, राजा और मंत्री अपने पुत्रों को लेकर, कृतज्ञ भाव के साथ चंदनगढ़ के राजमहल की ओर जाने के लिए रवाना हुए।

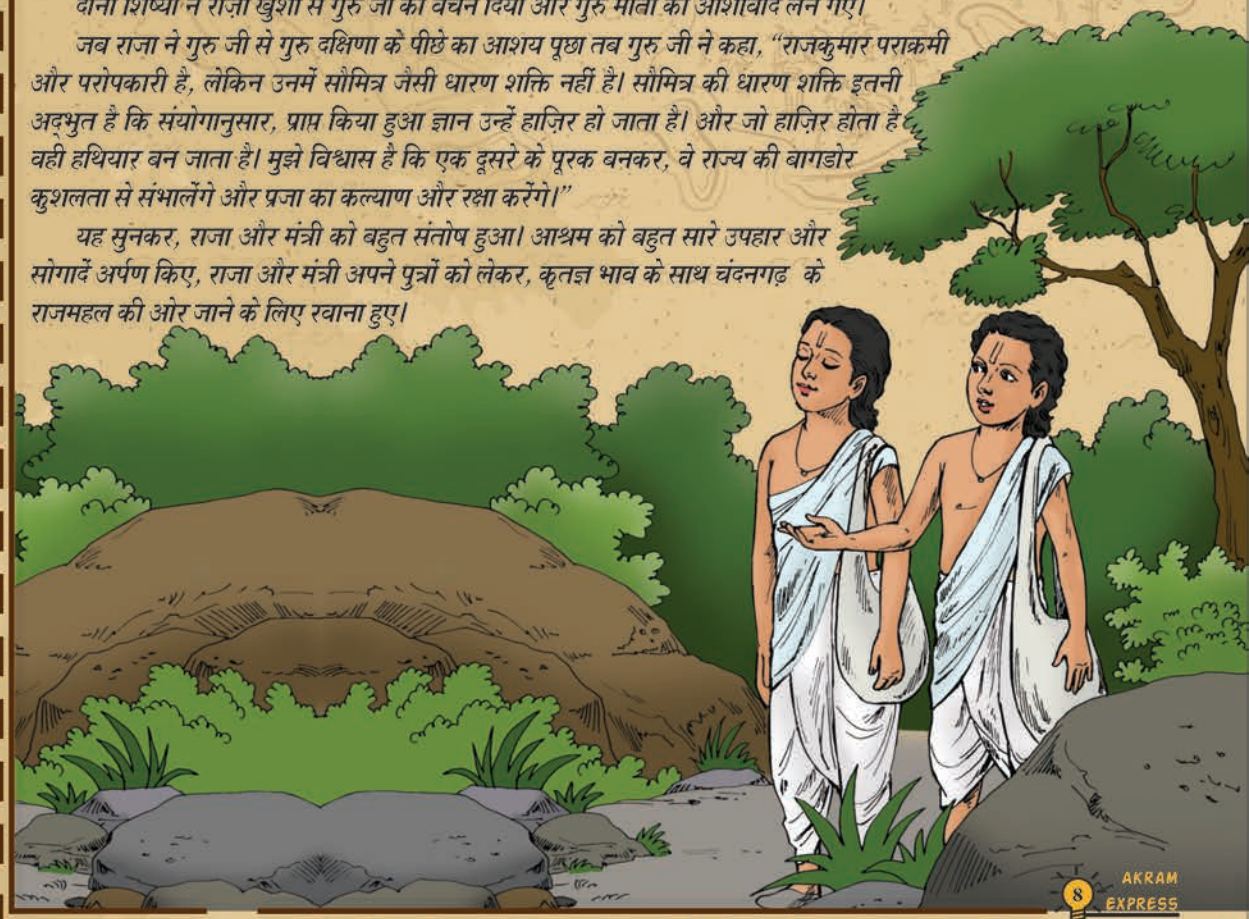

दिमाग़ में मोम

बचपन से ही सुचिता ने ऐस्ट्रोनॉट बनने का सपना देखा था। उस दिन हाथ में मार्कशीट लेकर, वह अपने रुम की दीवार पर लगे हुए ऐस्ट्रोनॉट डेरल कूक के स्माइलिंग फोटो के सामने उदास नज़र से देख रही थी।

उसकी आँखों से आँसू टपकना बंद ही नहीं हो रहे थे।

बस, बेटा बस। मार्कशीट भी गीली हो गई। अब इस रिज़ल्ट को तो हम नहीं सुधार सकते। लेकिन नेक्स्ट इग्ज़ाम के लिए तैयार तो हो सकते हैं न?

सुचिता ने तीन महीने पहले की मार्कशीट निकाली।

देखिए पापा, किसी को यकिन होगा कि ये दो मार्कशीट्स एक ही लड़की की है। एक में टॉपर, और दूसरे में फेइल...

इतने घंटे पढ़कर, इतनी मेहनत करके मेरे दो रिज़ल्ट में ज़मीन आसमान का फर्क क्यों है? परीक्षा में सवाल इतने ट्विस्ट करके पूछे थे कि ब्लेन्क हो गई थी।

डेरल कूक के फोटो के सामने देखते हुए,

तुझे पता है कि सूचि डेरल की सफलता का रहस्य क्या था? उनकी ग़ज़ब की धारण शक्ति।

एक स्पेस मिशन के समय डेरल की स्पेस-शिप में मिकेनिज़म फेल हो गया। कोई आशा नहीं थी कि उनकी स्पेस-शिप पृथ्वी पर वापस आ पाएगी। लेकिन डेरल ने अनहोनी करके दिखा दिया।

डेरल ने मशीन के फंक्शन की समझ इतनी ग़ज़ब तरीके से धारण कर ली थी कि ज़रा भी उलझे बिना खुद मशीन के कैलक्युलेशन्स करके वे स्पेस-शिप को सफलतापूर्वक पृथ्वी पर वापस ले आए।

वाव, अमेज़िंग।

रियली अमेज़िंग। चल, अब हम एक प्रयोग करते हैं।

पापा किचन में से दो कटोरे में पानी भरकर ले आए।

यह क्या है पापा?

मार्कस् कम आने का कारण ट्विस्टेड प्रश्न थे या कुछ और यह जानने का प्रयोग।

सुचि, उस खाने में से दो रुमाल निकाल। मैं यह मोमबत्ती जलाता हूँ।

पापा ने एक रुमाल पर मोम बिछा दिया।

फिर मोम वाला रुमाल एक पानी वाले कटोरे में और सादा रुमाल दूसरे पानी वाले कटोरे में रखा।

बताओ, इन दोनों कटोरों में से किसमें ज्यादा पानी शोषित हुआ? मैंने तो दोनों में एक समान ही पानी लिया था न?

सादा रुमाल ही ज्यादा पानी शोषित करेगा न। मोम लगाने से उस रुमाल की शोषण करने की केपेसिटी कम हो गई।

करेक्ट। इसलिए यदि समझ धारण हो जाती है तो डेरल की तरह चाहे जैसी भी परिस्थिति में वह धारण की हुई समझ रक्षा कर सकती है। लेकिन यदि मोम लगा हुआ होता है तो ट्विस्टेड प्रश्नों में उलझ जाते हैं और...

वेइट... आप यह कहना चाहते हैं कि इतना पढ़ने के बाद इस बार मेरे दिमाग़ में कुछ खास उतरा नहीं था क्योंकि मेरे दिमाग़ में मोम लगा हुआ था। कौन सा मोम?

पापा ने सामने टेबल पर पड़े हुए आईपेड की ओर इशारा किया।

और सुचिता तीन महीने पहले की शाम में चली गई। जब पापा ने टॉप करने के इनाम के रूप में आईपेड दिलवाया था। तब सुचिता ने सोचा था मनोरंजन के साथ वह पढ़ाई की एप्लिकेशन्स का उपयोग करके आईपेड का सदुपयोग करेगी।

लेकिन धीरे-धीरे उसे गेम्स्, वीडियोज, टी.वी. शोज, यू ट्यूब और मूवी की लत लग गई।

सुचि, सुचि... व्हेयर आर यू?

पापा, अब मुझे समझ में आ गया कि कौन से मोम ने चित्त को बिगाड़कर धारण शक्ति कम कर दी थी।

माय ब्राईट गर्ल। चल, अब थोड़ा रेस्ट कर ले बेटा। गुड नाईट।

तभी सुचिता के फोन पर उसकी फ्रेन्ड का टेक्स्ट मेसेज आया।

स्टार वोर्स का नया ट्रेलर फेन्टास्टिक है। चेक इट ओन यू ट्यूब।

एक क्षण के लिए भान भूलकर, सुचिता ने आईपेड स्विच ओन कर दिया। लेकिन, सामने की दिवाल पर लगे हुए डेरल कूक की फोटो पर नज़र पड़ते ही, वह तुरंत जागृत हो गई।

आईपेड स्विच ऑफ करके, अपने ध्येय को हृदय में रखकर, कॉज़ेज़ सुधारने का दृढ़ निश्चय करके, सुचिता एक नई शुरुआत के लिए तैयार हो गई।

चलो खेले...

ढूँढो और खो जाओ

(जितने चाहे उतने प्लेयर खेल सकते हैं।)

	A	B	C	D	E	F	G	H
10						X		
9						X		
8						X		
7						X		
6						X		
5					X	X		
4					X			
3					X			
2				X	X			
1			X	X				

Pic- 1

	A	B	C	D	E	F	G	H
10								
9								
8								
7								
6								
5								
4								
3								
2								
1								

Pic- 2

१) इस गेम में एक प्लेयर (बॉक्स में से बाहर निकलने के लिए) एक नक्शा बनाएगा (उ. दा. **Pic.1***) जिसे गेम खिलाने वाला प्लेयर अपने पास ही रखेंगे।*

२) दूसरे प्लेयर के पास **Pic. 2.** *जैसा नक्शा होगा।*

३) अब जो प्लेयर बचे हैं वह वन बाय वन करके खेल खेलेंगे। जो पहला प्लेयर आएगा उसे किसी एक स्टेप में ढूँढना है। (उ. दा. **C - 1***)*

४) जिस प्लेयर के पास नक्शा होगा और खिलाडी का स्टेप सही होगा तो हाँ कहेगा। ऐसे ही जब तक वह प्लेयर का गलत नहीं हो तब तक वह खेलेगा। और अगर गलत हो जाए तो उसके बाद दूसरे प्लेयर की बारी आएगी।

५) उसके बाद दूसरे प्लेयर की बारी आएगी। उसका पहला प्लेयर जहाँ तक पहुँचा होगा वहाँ तक का रास्ता याद रखना होगा। उसके बाद का रास्ता उसे ढूँढना होगा।

६) सभी प्लेयर को गेम में आगे बढ़ने के लिए पूरा रास्ता याद रखना पड़ेगा जिससे सारे प्लेयर्स को अंत तक एकाग्रता रहेगी तो ही जीत पाएँगे।

ऐतिहासिक गौरवगाथा

(राजनर्तकी रूपकोशा के प्रेम में आसक्त हुए स्थूलिभद्र ने तप और साधना के बल से काम-वासना पर विजय प्राप्त कर ली थी। गुरु के द्वारा उनकी प्रशंसा सुनकर अन्य साधु को ईर्षा हुई। अपनी ज्ञान सिद्धि, सिद्ध करने के लिए अगले वर्षाऋतु में साधु रूपकोशा के निवास पर गए। लेकिन वे रूपकोशा के रूप पर मोहित हो गए। स्थूलिभद्र के धर्मोपदेश से वैरागी बनी रूपकोशा ने मोह में आसक्त हुए साधु को युक्तिपूर्वक मोह से बाहर निकाला। अब आगे पढ़ते हैं...)

स्थूलिभद्र मुनि आध्यात्मिक जीवन में प्रगति करके आचार्य पद पर स्थापित हुए। उस समय शास्त्र किसी लिखित पुस्तक के रूप में नहीं थे। वे मन में ही याद रख लिए जाते थे और गुरु उस ज्ञान को शिष्यों को देते थे। किसी भी रूप में उनका दस्तावेजी सबूत नहीं था। आचार्य भद्रबाहू और स्थूलिभद्र की निगरानी में बारह आगम में से ग्यारह आगम (जैन शास्त्रों) का व्यवस्थित अभ्यास हुआ।

उस समय भयंकर अकाल पड़ गया। अकाल के समय में स्थूलिभद्र "रष्टिवाद" के नाम से पहचाने जाने वाले बारह वें आगम और चौदह पर्वों (जैन शास्त्र) का अभ्यास नहीं कर सके। अकाल के दौरान आचार्य भद्रबाहू स्वामी ने अपने १२, ००० शिष्यों के साथ दक्षिण भारत में स्थानांतरण कर लिया। आचार्य स्थूलिभद्र और बाकी के बचे हुए साधु, मुख्य साधु के रूप में पाटलीपुत्र में ही रहे। अकाल के कठिन समय में साधुओं को अपने नियम का पालन करने में बहुत तकलीफ पड़ने लगी। और साधुओं की यादशक्ति लुप्त होने लगी। जिससे वे आगमों को भी भूलने लगे।

अकाल का समय बारह साल तक चला। अकाल के बाद स्थूलिभद्र ने धर्मग्रंथ आगम को फिर से पुस्तक के रूप में तैयार करने का तय किया। स्थूलिभद्र की अध्यक्षता में पाटलीपुत्र में धर्म महासभा का आयोजन हुआ। उस महासभा में बारह में से ग्यारह आगम को मौखिक रूप से फिर तैयार किया गया। कोई साधु बारहवाँ अंग आगम और उसके चौदह पर्वों को याद नहीं रख सके। सिर्फ आचार्य भद्रबाहू स्वामी को उसका ज्ञान था लेकिन वे तो दक्षिण भारत में गए थे और वहाँ से नेपाल के पर्वतीय विस्तार में विशिष्ट तपश्चर्या और ध्यान कर रहे थे।

जैन संघ ने आचार्य स्थूलिभद्र और विद्वान जैन साधुओं से, आचार्य भद्रबाहू स्वामी के पास जाकर बारहवें आगम को तैयार करने की विनती की। लंबी मुसाफरी होने की वजह से कई साधुओं में से सिर्फ स्थूलिभद्र ही नेपाल पहुँच पाए। आचार्य भद्रबाहू से बारहवें आगम और उसके चौदह पर्वों को सीखना शुरू कर दिया।

एक बार स्थूलिभद्र की साध्वी बहनें दर्शन के लिए आईं। उस समय स्थूलिभद्र ने चौदह में से दस पर्व सीख गए थे। बहनें आ रही हैं ऐसा पता चलने पर, उन्हें अपने ज्ञान से जो चमत्कारिक सिद्धियाँ प्राप्त हुई थीं, वह बहनों को दिखाने की इच्छा हुई।

जब बहनें आईं तब उन्होंने गुफा में बैठकर सिंह का रूप धारण कर लिया। जब उनकी बहनों ने गुफा में प्रवेश किया तो भाई की जगह सिंह को देखा। घबराई हुई बहनें भद्रबाहू स्वामी के पास गईं और उस गुफा में भाई के बदले सिंह के होने की बात की।

आचार्य भद्रबाहू स्वामी समझ गए कि क्या हुए होगा। उन्होंने कहा, वह सिंह आपका भाई ही है। आप फिर से वहाँ जाओ। आपको भाई मिल जाएगा।

साध्वी बहनें फिर से गुफा में गईं। इस बार स्थूलिभद्र अपने असली रूप में थे। उन्हें ठीक-ठाक देखकर उनकी बहनों को बहुत आनंद हुआ।

स्थूलिभद्र ने अपनी सिद्धि का साधारण सी बात के लिए दुरुपयोग किया, यह जानकर भद्रबाहू स्वामी बहुत निराश हो गए।

उन्हें ऐसा लगा कि आध्यात्मिक शक्ति के लिए स्थूलिभद्र अभी परिपक्व नहीं है। इसलिए उन्होंने बाकी के चार पर्व सिखाने के लिए मना कर दिया। शिक्षा प्राप्त किए हुए स्थूलिभद्र ने सिखाने के लिए बहुत विनती की लेकिन भद्रबाहू स्वामी दृढ़ थे।

जैन संघ ने आचार्य भद्रबाहू स्वामी से अपना निर्णय बदलने और स्थूलिभद्र को बाकी के चार पर्व सिखाने के लिए बहुत मिन्नतें की, तब उन्होंने दो शर्तें रखीं।

"वे स्थूलिभद्र को अंतिम चार पर्व का अर्थ नहीं सिखाएँगे।"

"स्थूलिभद्र बाकी के चार पर्व किसी साधु को नहीं सिखा सकेंगे।"

"स्थूलिभद्र ने शर्तें मंजूर कर लीं और बाकी के चार पर्व सीखे।"

जब जैन ग्रंथ नहीं लिखे गए थे और अकाल के समय आचार्य स्थूलिभद्र ने उन्हें संभालने के लिए जो काम किया उसके लिए जैन इतिहास में उनका नाम उच्च आदर के साथ याद किया जाएगा।

समाप्त

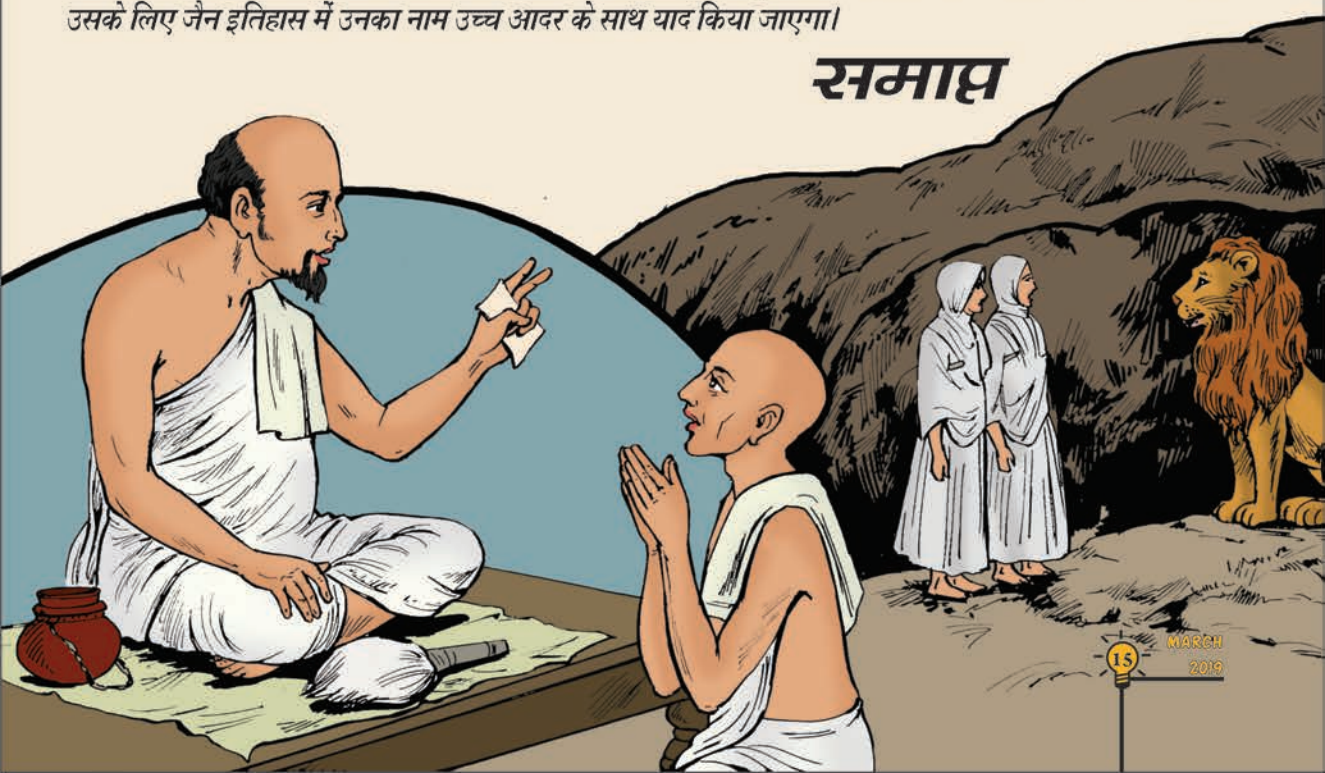

जीवंत उदाहरण

१. मेडम मैरी क्यूरी

मेडम मैरी क्यूरी विज्ञान की उत्कृष्ट साधना का उत्तम उदाहरण हैं।

मैरी क्यूरी का जन्म ७ नवम्बर, १८६७ के दिन पोलेन्ड के वोरसो शहर में हुआ था। उनके माता-पिता गणित शास्त्र और भौतिक शास्त्र पढ़ाते थे। उनके माता-पिता उत्तम शिक्षक थे। पाठशाला के डायरेक्टर थे। घर के वातावरण की वजह से मेरी को विद्या के प्रति और खास तो विज्ञान के प्रति अत्यंत प्रेम उत्पन्न हो गया था।

मैरी के बड़े भाई-बहन बुद्धिशाली थे। लेकिन मैरी सब से ज्यादा तेजस्वी थी। एक दिन मैरी की बड़ी बहन को पढ़ने में तकलीफ हो रही थी। चार साल की छोटी सी मैरी ने पुस्तक उठाई और उसने फटाफट वह पेज पढ़ दिया। मैरी की धारण शक्ति इतनी अद्‌भुत थी कि पिताजी जब उसके भाई-बहन को पढ़ाते थे तब वह भी सीख जाती।

चार साल की उम्र में मेरी, रशियन और फ्रेन्च भाषा पढ़ना सीख गई थी।

शिक्षक और दोस्त, मैरी की आश्चर्यजनक मेमोरी और समझ शक्ति से बहुत प्रभावित थे। एक दिन स्कूल में मैरी को एक कविता बहुत पसंद आई। जिस लड़के ने कविता सुनाई थी, उससे मैरी ने कविता की कॉपी माँगी। लड़के ने मज़ाक में कहा, यदि तुम्हारी मेमोरी इतनी अद्‌भुत है, जैसा सब मानते हैं, तो तुम याद करके खुद ही लिख लो। मैरी ने सचमुच कविता का शब्द, शब्द पेज पर लिख दिया।

उस समय, पोलेन्ड में स्त्रियों को उच्च अभ्यास करना मना था। लेकिन विद्या प्रेमी मैरी ने अनेकों कसोटियों का सामना करके अपनी पढ़ाई पूरी की।

मौलिक वैज्ञानिक संशोधन करना, मैरी क्यूरी के जीवन का ध्येय था। वह ध्येय उन्होंने साधना के रूप में लिया था। अपनी असाधारण धारण शक्ति और विज्ञान समझने के तीव्र उत्साह से, मैरी ने अपना ध्येय पूरा किया। इतिहास में बहुत ही कम लोगों को दो बार नोबेल पुरस्कार मिला है। लेकिन मैरी क्यूरी एक ही ऐसी वैज्ञानिक विभूति हैं कि जिन्हें दो बार अलग-अलग विषयों में, नोबेल पुरस्कार से सन्मानित किया गया है।

२. स्वामी विवेकानंद

धारण शक्ति से कितने आश्चर्यजनक परिणामों का सर्जन होता है, उसके अनेकों उदाहरण हैं। वह हमें नरेन्द्रनाथ अर्थात् स्वामी विवेकानंद के जीवन में देखने मिलता है।

नरेन्द्र प्रखर बुद्धिशाली थे। बचपन में जब अन्य बच्चे अक्षर-ज्ञान सीख रहे थे तब नरेन्द्र ने पढ़ना लिखना सीख लिया था। शिक्षक के मुख से जो भी शब्द निकलता, वह नरेन्द्र के दिमाग़ में अंकित हो जाता था। किसी भी किताब को एक बार पढ़ना ही उनके लिए पर्याप्त था। एक ही बार पढ़कर वे पुस्तक की सभी सारभूत बातों का वर्णन कर सकते थे।

एक बार स्वामी विवेकानंद कलकत्ता के बेलूरमठ में थे। उन्होंने पढ़ने के लिए एन्साक्लोपीडिया ब्रिटानिका (विश्व कोष) के ग्रंथ मँगवाए।

पुस्तकों को देखकर एक शिष्य ने कहा, स्वामी जी, एक ज़िंदगी में तो इंसान इतने सारे ग्रंथ पढ़ ही नहीं सकता।

यह सुनकर स्वामी जी बोले, यह आपने क्या कहा? दस भाग तो मैंने पढ़ लिए हैं। ग्यारहवाँ भाग पढ़ रहा हूँ।

सुनकर शिष्य को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, सचमुच पढ़ लिए हैं?

स्वामी जी ने कहा, हाँ। आपको कुछ पूछना है?

शिष्य ने गुरु की परीक्षा लेना शुरू कर दिया। अलग-अलग भागों में से शिष्य स्वामी जी से प्रश्न पूछता रहा और स्वामी जी सभी के जवाब देते गए। शिष्य के आश्चर्य का पार नहीं रहा। वह बोल पड़ा, स्वामी जी, यह बात मनुष्य शक्ति के वश की नहीं है। आप तो चमत्कारीक पुरुष हैं।

तब स्वामी जी ने कहा, इसमें चमत्कार जैसा कुछ भी नहीं है। यह तो एकाग्रता की शक्ति का परिणाम है।

देखा मित्रों, जिस सब्ज़ेक्ट में इन्ट्रेस्ट होता है और उसकी महत्ता समझ में आती है, वह धारण हो जाता है।

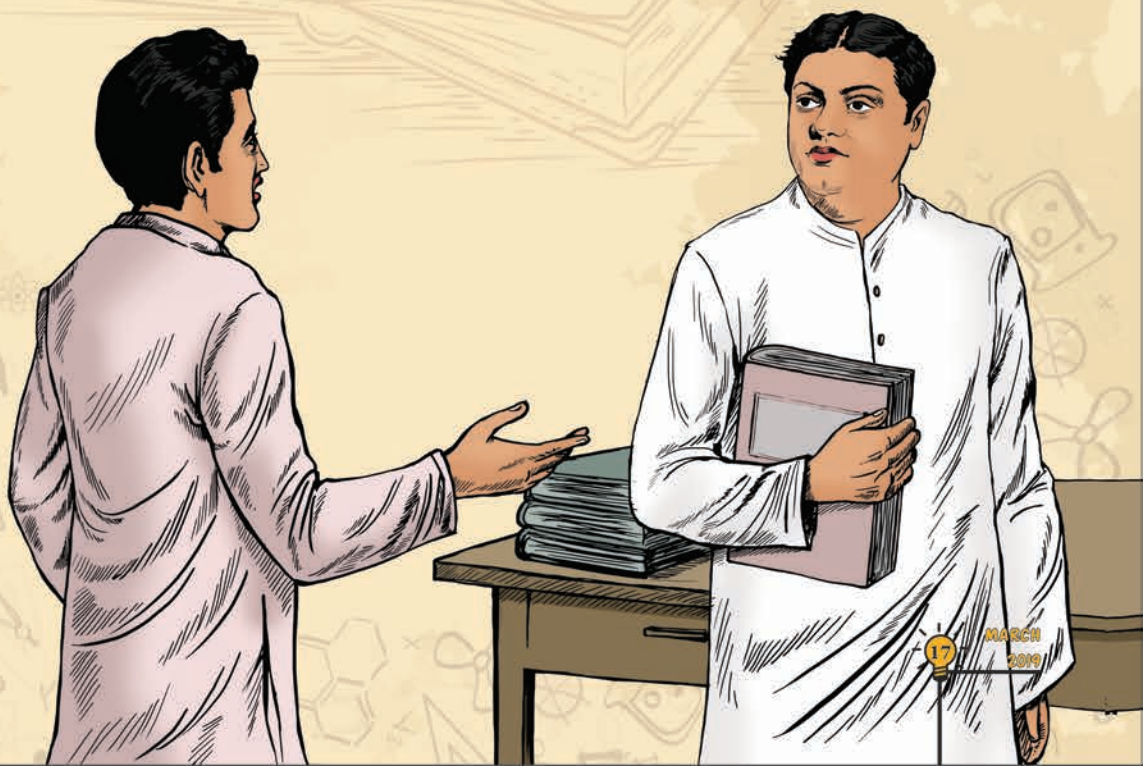

मीठी यादें

जब सीमंधर सिटी बना था तब शुरुआत के दिनों की बात है। एक ब्रह्मचारी बहन ने वहाँ पर घर लिया था। वह बहन मुंबई की थीं लेकिन जब अहमदाबाद आतीं तब नीरू माँ की सेवा में होतीं। इसी प्रकार वह बहन नीरू माँ की सेवा में थीं।

उन दिनों एक दिन दीपक भाई सभी महात्माओं के घर घड़ा रखने जाने वाले थे। वे सभी घड़ा लेकर नीरू माँ के पास विधि करवाने के लिए आए। तब वे बहन वहाँ सेवा में ही थीं।

नीरू माँ विधि कर रहे थे तब उन बहन को मन में विचार आया, मैं यहीं हूँ फिर भी मुझे पता नहीं है कि आज दीपक भाई सभी के घर घड़ा रखने वाले हैं। नहीं तो मैं भी उनके हाथ से अपने घर घड़ा रखवा देती न।

दोपहर को जब वह बहन नीरू माँ के पैर दबा रही थीं तब नीरू माँ ने उनसे कहा, अली, आज अपने घर दीपक भाई के हाथ से घड़ा रखवा देना चाहिए न।

वे बहन बोलीं, नीरू माँ आप विधि कर रहे थे तब मेरे मन में भी यही चल रहा था लेकिन मुझे पता ही नहीं था।

उनके जाने के बाद उन्होंने नीरू माँ से कहा, नीरू माँ मुझे पता होता तो मैं भी दीपक भाई के हाथ से अपने घर घड़ा रखवा देती।

दूसरी बार जब वे दादा दर्शन गई तब वे नीरू माँ से पूछना चाहती थीं कि, जब मैं अडालज आऊँ तब अपने घर पर घड़ा रख दूँ?

जब वे ऊपर पूछने गई तब नीरू माँ उन्हें देखकर बोली, तुम्हारे लिए एक सरप्राइज़ है।

उन बहन ने पूछा, क्या?

नीरू माँ ने कहा, तुम्हारे घर हमने घड़ा रख दिया है। हमारे हाथ से रखा है।

यह सुनकर वह बहन तो एकदम गद्‌गद् हो गईं।

इस तरह नीरू माँ सभी का इतना ध्यान रखते थे कि लोग पूरी तरह से जीत जाते थे।

हा...हा...ही...ही...

टीचर : जिसको सुनाई नहीं देता उसको क्या कहेंगे?
शिष्य : कुछ भी कह दो उसको तो कौन सा सुनाई देता है।

टीचर : १५ फलों के नाम बताओ
टीटू : आम, केला, अमरुद
टीचर : शाबास, १२ और फलों के नाम बताओ
टीटू : एक दर्जन केले

टीचर : टीटू, स्वर और व्यंजन में फर्क बताओ?
टीटू : सर, स्वर मूँह से बाहर निकलते हैं और व्यंजन मूँह के अंदर जाते हैं।

मुन्ना : ये गाँधी बापू हर नोट पे हँसते क्यों रहते हैं?
सर्किट : सिम्पल है भाई, अगर रोएँगे तो नोट गीला हो जाएगा ना!!

टीचर : संजू यमुना नदी कहाँ बहती है?
संजू : ज़मीन पर
टीचर : नक्शे में बताओ कहाँ बहती है?
संजू : नक्शे में कैसे बह सकती है, नक्शा गल नहीं जाएगा।

Information on 'Akram Express' Monthly Magazine - Form 4 (Rule No. 8)
1. Place of Publication: Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
2. Periodicity of its Publication: Monthly
3. Printers Name: Amba Offset Nationality: Indian
Address: B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025
4. Publisher's Name: Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation Nationality: Indian
Address: Simandhar City, Adalaj – 382421, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
5. Editor's Name: Dimple Mehta Nationality: Indian Address: Same as above
6. Name of Owner: Mahavideh Foundation Nationality: Indian Address: Same as above
I, Dimple Mehta hereby declare that the above stated information is correct to my knowledge and belief.
Date: 08-03-2018, Ahmedabad Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
(Signature of Publisher)

Akram Express

March 2019
Year : 06, Issue : 12
Conti. Issue No.: 72

BALVIGNAN
Fun 'n' Gyan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081/2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

आत्मविश्वास ही
अद्भुत, अदृश्य और
अनुपम शक्ति है इसके
आधार पर ही आप
अपने ध्येय की ओर
आगे बढ़ते हो।

- स्वेट मार्डन

All The Best

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए खास जानकारी कि अगले महीने से कुछ कारणों से हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस पब्लिश करना बंद कर रहे हैं। अब से हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस **Akonnect app** या **Kids Website** की नीचे दी गई लींक से डाउनलोड करके पढ़ सकेंगे।

https://kids.dadabhagwan.org/knowledgehouse/magazines/Hindi/All+Years/All+Months/

अभी जो हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस के ऐक्टिव मेम्बर हैं, उन्होंने मेम्बरशिप रजिस्टर करने के दौरान जो रकम दी थी, वह पूरी रकम उनको मनी ऑर्डर द्वारा वापस भेज दी जाएगी।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025